















మనమును మనమును నడిపించిన నరవర యప్రియము తన మనంబునకగు దా  
నొరులకు నవి సేయకునికి పరాయణము పరమ ధర్మపథముల కెల్లాన్

(మహాభారతము)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

## రాజకీయ పార్టీల ఢీవూ - దిగులు

[illegible]

(உவக)

\_\_\_\_\_



వశ్యం పెై పెరిది.  
 బల్నూ రాజీవూచు యేదాని, నిజా  
 నిక మరదాద్యులు ఆజీవంక చుంకి  
 అయిన వనది నుంచి వైదొంగింపురా  
 ద్రించి వెదారిలో నీవులు రాజీవునాడు,  
 అయితే బల్నూ రాజీవూచు చేయదని  
 అయిన చేయదలచరాజీవంగాంచి చేయ  
 నీయదని కొంచెం అన్నాడు. అది అది  
 రాజీవూచు. సాగెదనన్న పోరాడనాడు.  
 సాచూనన్న ప్రజలు అప్పొకినన్నాని  
 అయినా వున్నది తప్పునీయింది తప్పునని  
 తిరిగి బల్నూ వనదెంచి తప్పునని  
 బాటి వంటి వక్రికి అదిరావం అన్న  
 గింపవచ్చురా అని చూ కొక నిన్ను  
 వ్యాఖ్యానించాడు.  
 అయితే ఇలా మూర్ఖుడిన దాటిరా  
 అను పేరువైదొలించరాని శక్తివంటిదే.  
 ఎవడు సాచీ ఎవెండా. ఎవడు  
 సీత్రవాడు ఎవెండా తెలియకయిందో  
 ప్రజలు నివసిస్తున్నాడు.  
 బల్నూ అయితే ని బల్నూ ఎ రో  
 వైమనూనికీ ఒక ప్రదాన కాగెండా,  
 అయిన "రీతి రాత్తు" అనే కావం  
 ఎక్కడో, ప్రాగ రీతికి వేయించి  
 వల్ల అయిన ఒకరే పెరిందిదే అని  
 అని నిజ్నాడు. (మొస్తున్నాడు.  
 బల్నూ వదిలి అన్ననే చేయలేదని  
 రాత్రివేళ సాంప వేసింది వైనానిని  
 దింపరాని రాత్రింగో బాంబువేలా  
 కొడవన్నాడు.  
 శ్రీ బల్నూ వన్న చదు నీయ  
 ప్రితి అది

[illegible][illegible][illegible]

రాష్ట్ర విద్యార్థులకు ఉచితంగా పాఠశాలలు ఏర్పాటు చేసే అభివృద్ధి కార్యక్రమం  
ఈ విషయం ప్రకటించారు.

ప్రస్తుతం ప్రకటించిన వివరాలు:

అక్షరాస్యత, వీలెడత 14 : గత సమాఖ్య, డిసెంబరులో జరిగిన  
ఇంగ్లీషు, తెలుగు లోని హైస్కూల్ ఇన్ ఫోర్ములను ఆధారంగా తీసుకుంటూ  
అక్షరాస్యత నెంబర్లుగా యా దిగువ ప్రకటిస్తున్నాము

SANGA REDDY GOVT JUNIOR COLLEGE					
TYPEWRITING ENGLISH (HIGHER)					
PASS					
372901	372943	372904	372906	372905	372911
372923	372926	372927	372941	372952	372953
372963	372966	372967	372951	372982	372996
373008	373010	373011	373012	373015	373017
373086	373053	373094	373098	373100	373101
373102	373103	373104	373105	373106	373107
TYPEWRITING ENGLISH (LOWER)					
FIRST CLASS					
175246	175574				
PASS					
174564	174971	174977	174978	174986	174953
174996	174987	174995	174999	175005	175008
175045	175082	175102	175151	175152	175159
175207	175212	175215	175221	175231	175235
175247	175257	175259	175262	175283	175364
175400	175408	175413	175415	175421	175422
175454	175456	175461	175467	175471	175472
175489	175495	175502	175507	175508	175509
175543	175555	175571	175577	175584	175585

(మొత్తం 6 వ పేజీలో)



**పంజాబు సమస్య : నీలం సూచన**



PASS									
261437	261441	261445	261449	261453	261457	261461	261465	261469	261473
261477	261481	261485	261489	261493	261497	261501	261505	261509	261513
261517	261521	261525	261529	261533	261537	261541	261545	261549	261553
261557	261561	261565	261569	261573	261577	261581	261585	261589	261593
261597	261601	261605	261609	261613	261617	261621	261625	261629	261633
261637	261641	261645	261649	261653	261657	261661	261665	261669	261673
261677	261681	261685	261689	261693	261697	261701	261705	261709	261713
261717	261721	261725	261729	261733	261737	261741	261745	261749	261753
261757	261761	261765	261769	261773	261777	261781	261785	261789	261793
261797	261801	261805	261809	261813	261817	261821	261825	261829	261833
261837	261841	261845	261849	261853	261857	261861	261865	261869	261873
261877	261881	261885	261889	261893	261897	261901	261905	261909	261913
261917	261921	261925	261929	261933	261937	261941	261945	261949	261953
261957	261961	261965	261969	261973	261977	261981	261985	261989	261993
261997	262001	262005	262009	262013	262017	262021	262025	262029	262033
262037	262041	262045	262049	262053	262057	262061	262065	262069	262073
262077	262081	262085	262089	262093	262097	262101	262105	262109	262113
262117	262121	262125	262129	262133	262137	262141	262145	262149	262153
262157	262161	262165	262169	262173	262177	262181	262185	262189	262193
262197	262201	262205	262209	262213	262217	262221	262225	262229	262233
262237	262241	262245	262249	262253	262257	262261	262265	262269	262273
262277	262281	262285	262289	262293	262297	262301	262305	262309	262313
262317	262321	262325	262329	262333	262337	262341	262345	262349	262353
262357	262361	262365	262369	262373	262377	262381	262385	262389	262393
262397	262401	262405	262409	262413	262417	262421	262425	262429	262433
262437	262441	262445	262449	262453	262457	262461	262465	262469	262473
262477	262481	262485	262489	262493	262497	262501	262505	262509	262513
262517	262521	262525	262529	262533	262537	262541	262545	262549	262553
262557	262561	262565	262569	262573	262577	262581	262585	262589	262593
262597	262601	262605	262609	262613	262617	262621	262625	262629	262633
262637	262641	262645	262649	262653	262657	262661	262665	262669	262673
262677	262681	262685	262689	262693	262697	262701	262705	262709	262713
262717	262721	262725	262729	262733	262737	262741	262745	262749	262753
262757	262761	262765	262769	262773	262777	262781	262785	262789	262793
262797	262801	262805	262809	262813	262817	262821	262825	262829	262833
262837	262841	262845	262849	262853	262857	262861	262865	262869	262873
262877	262881	262885	262889	262893	262897	262901	262905	262909	262913
262917	262921	262925	262929	262933	262937	262941	262945	262949	262953
262957	262961	262965	262969	262973	262977	262981	262985	262989	262993
262997	263001	263005	263009	263013	263017	263021	263025	263029	263033
263037	263041	263045	263049	263053	263057	263061	263065	263069	263073
263077	263081	263085	263089	263093	263097	263101	263105	263109	263113
263117	263121	263125	263129	263133	263137	263141	263145	263149	263153
263157	263161	263165	263169	263173	263177	263181	263185	263189	263193
263197	263201	263205	263209	263213	263217	263221	263225	263229	263233
263237	263241	263245	263249	263253	263257	263261	263265	263269	263273
263277	263281	263285	263289	263293	263297	263301	263305	263309	263313
263317	263321	263325	263329	263333	263337	263341	263345	263349	263353
263357	263361	263365	263369	263373	263377	263381	263385	263389	263393
263397	263401	263405	263409	263413	263417	263421	263425	263429	263433
263437	263441	263445	263449	263453	263457	263461	263465	263469	263473
263477	263481	263485	263489	263493	263497	263501	263505	263509	263513
263517	263521	263525	263529	263533	263537	263541	263545	263549	263553
263557	263561	263565	263569	263573	263577	263581	263585	263589	263593
263597	263601	263605	263609	263613	263617	263621	263625	263629	263633
263637	263641	263645	263649	263653	263657	263661	263665	263669	263673
263677	263681	263685	263689	263693	263697	263701	263705	263709	263713
263717	263721	263725	263729	263733	263737	263741	263745	263749	263753
263757	263761	263765	263769	263773	263777	263781	263785	263789	263793
263797	263801	263805	263809	263813	263817	263821	263825	263829	263833
263837	263841	263845	263849	263853	263857	263861	263865	263869	263873
263877	263881	263885	263889	263893	263897	263901	263905	263909	263913
263917	263921	263925	263929	263933	263937	263941	263945	263949	263953
263957	263961	263965	263969	263973	263977	263981	263985	263989	263993
263997	264001	264005	264009	264013	264017	264021	264025	264029	264033
264037	264041	264045	264049	264053	264057	264061	264065	264069	264073
264077	264081	264085	264089	264093	264097	264101	264105	264109	264113
264117	264121	264125	264129	264133	264137	264141	264145	264149	264153
264157	264161	264165	264169	264173	264177	264181	264185	264189	264193
264197	264201	264205	264209	264213	264217	264221	264225	264229	264233
264237	264241	264245	264249	264253	264257	264261	264265	264269	264273
264277	264281	264285	264289	264293	264297	264301	264305	264309	264313
264317	264321	264325	264329	264333	264337	264341	264345	264349	264353
264357	264361	264365	264369	264373	264377	264381	264385	264389	264393
264397	264401	264405	264409	264413	264417	264421	264425	264429	264433
264437	264441	264445	264449	264453	264457	264461	264465	264469	264473
264477	264481	264485	264489	264493	264497	264501	264505	264509	264513
264517	264521	264525	264529	264533	264537	264541	264545	264549	264553
264557	264561	264565	264569	264573	264577	264581	264585	264589	264593
264597	264601	264605	264609	264613	264617	264621	264625	264629	264633
264637	264641	264645	264649	264653	264657	264661	264665	264669	264673
264677	264681	264685	264689	264693	264697	264701	264705	264709	264713
264717	264721	264725	264729	264733	264737	264741	264745	264749	264753
264757	264761	264765	264769	264773	264777	264781	264785	264789	264793
264797	264801	264805	264809	264813	264817	264821	264825	264829	264833
264837	264841	264845	264849	264853	264857	264861	264865	264869	264873
264877	264881	264885	264889	264893	264897	264901	264905	264909	264913
264917	264921	264925	264929	264933	264937	264941	264945	264949	264953
264957	264961	264965	264969	264973	264977	264981	264985	264989	264993
264997	265001	265005	265009	265013	265017	265021	265025	265029	265033
265037	265041	265045	265049	265053	265057	265061	265065	265069	265073
265077	265081	265085	265089	265093	265097	265101	265105	265109	265113
265117	265121	265125	265129	265133	265137	265141	265145	265149	265153
265157	265161	265165	265169	265173	265177	265181	265185	265189	265193
265197	265201	265205	265209	265213	265217	265221	265225	265229	265233
265237	265241	265245	265249	265253	265257	265261	265265	265269	265273
265277	265281	265285	265289	265293	265297	265301	265305	265309	265313
265317	265321	265325	265329	265333	265337	265341	265345	265349	265353
265357	265361	265365	265369	265373	265377	265381	265385	265389	265393
265397	265401	265405	265409	265413	265417	265421	265425	265429	265433
265437	265441	265445	265449	265453	265457	265461	265465	265469	265473
265477	265481	265485	265489	265493	265497	265501	265505	265509	265513
265517	265521	265525	265529	265533	265537	265541	265545	265549	265553
265557	265561	265565	265569	265573	265577	265581	265585	265589	265593
265597	265601	265605	265609	265613	265617	265621	265625	265629	26563
















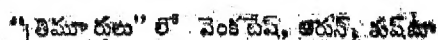
తెలుగు సేత: భూపతి రాజు

34


 ಶಾಲುಕು 50 ಸಿಂ.ಮಿ. ಕೂಡೆ ಎದುರು  
 ಲೇಯ. ಅರುದ್ಧಾ ಇತಿ 60 ಮೀಟರ್  
 ಪಾಡುತು ವರುಗುಲೇಯ.

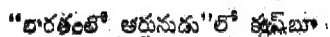
12-14. © RANG REKHA FEATURES PVT. LTD. 86





త్రిమత ఆక్రమణి అనుష్ఠాన సమ  
 ర్థింక పరివర్తనా స్థూరిమోన వారి  
 ప్త చిత్రంక విమిలంక ॥ న న ద్వి ప  
 వేగి యి. రెండు విమలవర్ణన పోతన  
 ఎ. ఎన్. ఆర్య నాగార్జున పోషిస్తున్న  
 క చిత్రంకో శరద, రమణ, సత్య  
 నారాయణ, మాతవీసాగర్, గృహ్యారాధి,  
 పి. ఎల్. నారాయణ, బేదా, భద్రవతి  
 నారా, హృదయ, వై. విమల, భంజిక,  
 అరణ, కృష్ణవేద, నియం నవారా  
 నవదస్తున్నాది. కళ, మాటలు; వరుహరి  
 విశదబలు, గీతలు; మేఘాని, సమీకరణ  
 భక్తిపద్య, కళ యన్. ప్రధాన,  
 సంయుక్త కళకళ్యంకం. ఎ. ఎన్. కెర్కె,  
 సహారా దర్శకత్వం; వారి, సా. పా.  
 నవారాధి. రమ్య. హైదరాబాద్, రామ  
 రాత్రి, శ్రీనివాస్, హైదరాబాద్.  
 కర్నూరు: కె. వెంకటేశ్వరరావు. నిర్మాత:  
 వెంకట ఆక్రమణి.  
 కృష్ణవేద రమ్య ఫిలిమ్స్  
 చిత్రం

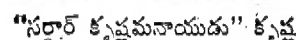
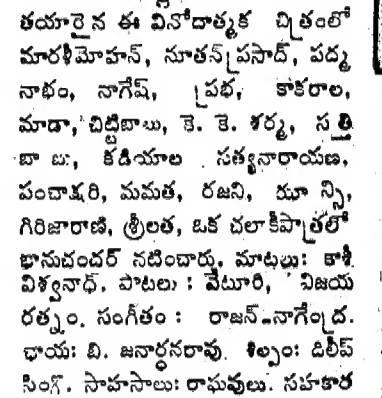
పి. శివదండరామదెడ్డి దర్శనశతకంలో  
 కె. నాగేశ్వరరావు గిరియేటి బ్రతుంలో  
 వచ్చినాడు. సత్యరాధాయణ గిరిరావు  
 మాతవీరరావు, మాతవ సప్రసాద, గిరి  
 బాబు, రాఘవప్రసాద, వేణు, వీరభద్రరావు,  
 శ్రీరామ్మ వగైరా నటవరం. మహిళా:  
 సత్యారాధయ్య, పాటయిమ్మారెడ్డి. సంగీతం:  
 భక్తవరం, రాయం. నృత్యం:  
 శిల్పిం: బాపన్నరాజు. సాహసాణా:  
 సాహసం. కూర్పు: సత్యం, నాగేశ్వర  
 రావు. సమర్పణ: శ్రీ కాం సత్య  
 నారాయణ.



**కృష్ణ “మకుటంలేని  
మహారాజు”**

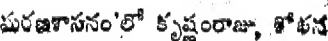
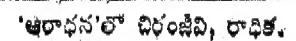
తే. బాపయ్య దర్శకత్వంలో  
శ్రీకృష్ణ ప్రసన్న పిక్చర్స్ అధినేత  
బి. వి. యస్. ఎస్. ప్రసాద్ నిర్మించిన  
పై ద్వితలలో కృష్ణ, చతుర్దశానన్,  
గుమ్మడి సూర్య, రాజేంద్ర ప్రసాద్,  
రమ్య, సూర్య ప్రసాద్, కనకా  
దేవదాస్, పద్మసురి వెంకటేశ్వరరావు,  
రవచెరిరావు, శ్రీరా వెంకటేశ్వరరావు,  
రాళ్ళపల్లి అరుణ, పై. విజయ, అన్న  
పూర్ణ, పూర్ణిమ, పాద, సిర్సి  
మొదలగువారి నటించిన చిత్రం: పరు

యారి నొడవరలు. గియాల వెలుగు.  
 రాయం. ఏ వెంకటేశ. నృత్యాల నలీమ.  
 సునతేయ. పుత్రతల్లి. లెలెల. తానృద్ధ  
 రాజా. సాహసాల. ఎం. ఎస్. రాన్  
 సహకార దర్శకత్వం. శాస్త్రి హేమచందర్  
 సర్వసహా. ఎం. ఎం. సుబ్బారావు. కూనూరు  
 కోటగిరి వెంకటేశ్వరరావు  
 రవికళ్యాణచందర్ చిత్రం  
 కృష్ణ. విశ్వనాథకావిశిష్యన్  
 మ్యూజిక్ ప్రారంభమయ్యి. పి.వి.  
 కళ్యాణచందర్ చిత్రంతో. కృష్ణ. పి.వి.  
 సినిమాతం. ఎం. ఎస్. ప్రసాద్. ఆదర్శ  
 సాహిత్యాస్పర్. దర్శకత్వం. కె. విశ్వ  
 నాథ్.



ద్యౌతకం కె. బాపర్తి, రామారావు, తలసానో సుని వీరి ము వారు  
కూర్చు గడిచినప్పుడు, ని ర్మా త : పునర్నిర్మిస్తున్నారు. శ ర క్ బా  
ఓ. ఆచార్యులు, స్రుష్టాపై, దర్శకత్వం రాజేంద్ర హెబ్బా, చల్ల మోహన్,  
శింఘి వెంకటేశ్వరస్వామి, శరత్ బాబు, రమారావు, మేలు, నిర్మలదేవి  
శరత్ బాబు సమర్పించే రావు, పాతదారులు, నిర్మలదేవి  
“గాంధీగర్ సెలెక్షన్స్ లి” శి.రెడ్డి శేఖర్, జె. గోపాల్రెడ్డి, పి.మె.ర  
శిల్పి లానానో జరిగి చివ్రితమైన సారథి, దర్శకత్వం వన్ రామచంద్ర  
సంఘటనలతో తరువైన ‘గాంధీగర్ సెలెక్షన్స్ లి’ అనే మహాశిల్ప చిత్రం  
పాక్షి జ్యూనియర్ దానివి అదే కేసుగ

— జి. వి. జి.



చురుమనే మండు దెండలో తలకే  
మూతం అద్దాదన లేకుండా పడి  
పడిగా నువ్వున్నాడు పద్మానాభం. ఆ  
వేళ రోజు కన్న ఆంధ్ర మైం ది  
అపీనుతో పండు దైవదేవీ పంపాల్సిన  
లెక్క పుండటంతో.  
కడుపులో ఎడకలు ప రి గె డు  
తున్నాయి.

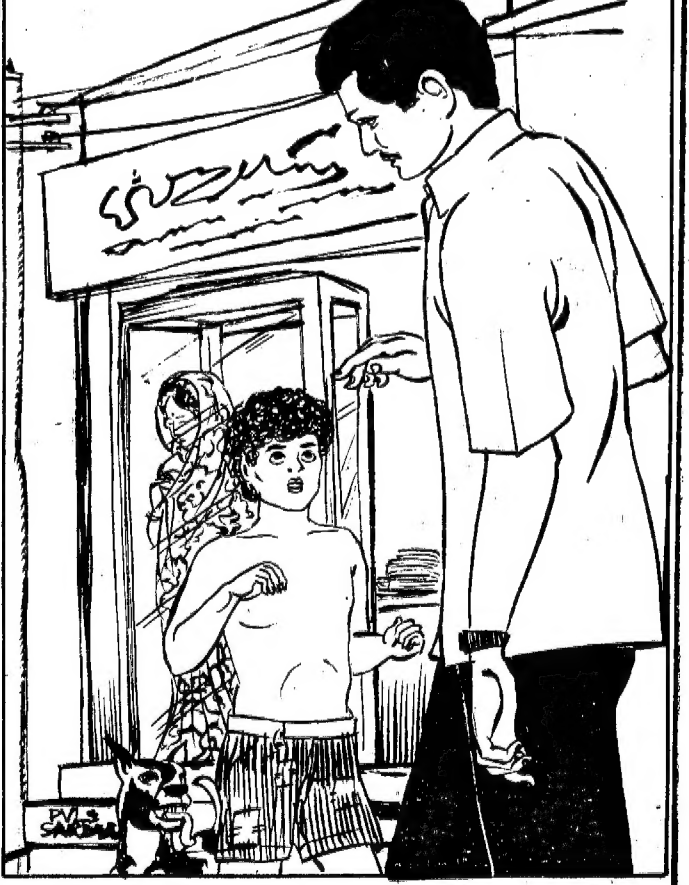
“ముద్రా” గానగర్భ శీర్షికం! పదేళ్ల గానాభ్యుదయ కవీసరి ఒక సైకిల్ పార్కులో కేసు వేసాడు. పట్టణంలో ఘన శతాబ్ది కొంత డబ్బు పనిచేసి, ఫలితంగా పట్టణంలో కేసున మారాకొక కొంతదగ్గు పనిపనిచేసి పట్టణ వాడొకసం పాం డబ్బా... పట్టణం వాడి నిమిత్తం తన భార్యకొకటి చాసివేసాడు.

“ఒరేమి అన్నయ్యా...! నాకే యాభై పంపరా...! పండ్లకొ కొత్త మీర కొనుక్కంటాను” అం టూ దాస్తాంది హోమియాల్స్ ఘన వివాహం అయిన పరైలు. అనలు అమె అతడుంటానే పంపం తన భర్తయి...

యీలా యీ అభ్యుదయ ఫేర్లరి నిలక... అయిపోతున్న తను దస్తావీజుల ద్వారా వెయ్యేలేక పోతున్నాడు సరిగదా ప్రతి నెల ఏమో అప్పులు వెయ్యడం తప్పని అం అఫ్తం... చుట్టే సైకిల్ కొనా కొన కొకకొ గగన. హామీపంలూ వుండి వేయింది. అదేం అగ్గరి కాదు. ఒక సామాన్యకొ కవీసరిపంపర... దానిపూతా తన నోవ్లకొకేకే పో నన్ను కం. గాదంగా నిల్వలూకు పంపాకం.

తివిన హోటలు చేర్చివాలండి  
 యింకా ఒక మైలు హదూరి.  
 పట్టణాన్ని చూడండి అం క  
 నరకు మునిసిపల్ ఆఫీసు గేటు దగ్గర  
 కార్పొరేషన్ మున్సి క్లర్కుకు వెంట  
 దూకుడు.  
 నాకు మేమున్న సిక్రెటరీ వెనక  
 డిగ్గర దాగా వెలిగి క్రికి డి క్రి  
 వెలాగుకొంది. ఆమెనునా వాడి వంట  
 పని లాంటి అప్పుడూ లేదు.  
 కత్తెను ఒక్కడే చూడగా దాగా ముని  
 తివర. వాడున్నాడు కడుపులో కానన్న  
 గుంటలైవ్వాడు. పట్టణానికి వెంట  
 నుంచి వెలిగిగా సిక్రెటరీని  
 క్లర్కుకు. కత్తెనాచు వెలిగా నడకై  
 నుంచి వెలిగిగా అచిరు నెమ్మదిగా  
 నుంచి వెలిగిగా సిక్రెటరీని వెంట  
 కత్తెను.

వేళదాటిపోయిందిరా. అబ్బి  
పెదసూడిరాజ్యలక్ష్మీదేవి



పద్మనాభం ఆ ముష్టి కులరాదీనియూ బాంబం ప కామచి చూసే పద్మ  
నాభం చువస్తుంటే ఒక సంకర్షణ చేసి  
అతడికి ముష్టి కులరాదీ జాలి.  
తడు బోనం చేస్తుంటేనే కాదు ఆ  
కులరా హోటలు దివంగు పోస్తూ  
ని వుంటారు. వాడి కళ్ళలో అక్క...  
బంటు. సాంబారు ఆంధ్రవారికి సింగం.  
అక్షిణి ఆన్యంలో సంగం పోలివు. ఆ  
కు రెద్ది హోటలు దివంగు. నిలబడి  
ముష్టి కులరా చేతుల్లో పడేస్తారు.  
హా ప్రసాదంగా ఆ కులరాం రీసుమన  
కులరాడి కళ్ళలో కన్న జలైత. ఆ  
కాండలో ఆ కులరాడి మొహంలోని

పవిత్రమన్నూ ఎప్పుడో అరిగి పోయింది.  
 ప్రాచీన నంది మళ్ళీ కడుపుతో ఎలు  
 కలు పరిగెడు తున్నాయి.

అ త్మలాడిన పవ్తూరం పవ్తూరం  
 చీకంగా వుంది. "ఏదో యీ బాబు..  
 కూర తో పెండ్లికడనే వాడై పో  
 పోయిందో....! అని కాకలి వత్తేది!  
 పొడై క నడకూడు .. ఎప్పుడగదా...!  
 పూపానా ధూడిపా రి స్నా ను  
 కాకాసు...! పెటాలు క డి చే ను  
 కన్నాడు క్కూ!"

కిచ్చా" ఇది ఎను తలుపు కుదుట  
 వుంది పి"నూరంది.  
 "నిన్న దిండులుదా" యిది తిని!  
 అమ్మ వున్నప్పుడు టిప్పాసుల పండ్లకి-  
 పావు నిమగ్నం, రెండు అంగుల వున్నప్పుడు  
 కను తానుకొద్ది అనున పోలేరువుంది.  
 అమ్మేకే తను కడుపునందుగా తిడ్డిసి.  
 కూర్చూ ఒక లో అలెచనలు  
 ఆలెని మిదిపోయి తెగిన గాన చుట్టా  
 వున్నాయి.  
 పద్మనాభం పండ్లకు నడుపున్నాడు  
 నెత్తి మీద చందం పేర్చేస్తోంది.  
 అతడికిది తెలియదు.  
 "మెట్టికి లో" మంది ఇంపుడు పేక్చర్  
 వచ్చిందని దావాచందం పేర్చాడు.  
 "పే రే మి దో" చెప్పాడు తాను సరిగ్గా  
 గుర్తుచేసి, హిరాయిని నిడతొలైలో  
 పాస్ ను చేస్తున్నాడు. నక్కంగా  
 ఆ సీను... చాలా దేరిం గ గ  
 నూపించిన పడగది సీను నుదర్శించా..  
 చాలా బాగున్నాడు పేదరి తలూకు  
 పుట్టు చూడా పేదరి, పడిచింది  
 దావాచందం అమ్మని వర్ణించి చెబుతుంటే  
 నరాలు కోదేనాయి. ఆ సీనునా మిన్ను  
 పడకు, తాని అలా.. నెలారాచిర్రోజులు,  
 ఇంతా వారం దాకా జీతం రాదు. ఈ  
 లోపం ఆ సీనునా మూలం కోదేనా!  
 ఈ ఇంపు ను సీనుచందం అదే రోజు!

ఆకపు, దామిదిరానుగ్గిగెత ఒక పది  
రూపాయలు యిస్తామేమో...! ఆ రది  
తేలునిండా ఎప్పుడూ నోట్ల కట్టలు  
వుంటాయి. అవి అందరికీ కనిపించాయి  
అనికల ఎప్పుడూ పెరిగినవల్లనేయేమోనా.  
అదిగెత ఒక పదిరూపాయలు ఎప్పుడు  
పోతూ, డబ్బు తీసుకుని రేపే వెళ్లి  
చూడాలి. అంతే కాని అలాగేయిద్దామంటే  
ఎక్కడయిమింద యింకా ఎక్కువగా  
వుంటుంది. పచ్చనూరం పెదవుల మీద  
చిరునవ్వు మెరిసింది.

హుషారుగా యీర వేసుకుంటూ  
నడక వేగం పెంచుకుండు.  
తారావేలిన నీ కృప వై పైకి  
లాకుంటూ పరిగెత్తు కులాడు.  
కుల్లరాడు పద్మనాభుంటాయి వెంటే  
దాండుంటేనుకున్నాడు. ఆవునుకుంటే...  
నిన్నగా లేదావేలే పద్మనాభం కు కృ  
శేషాన్ని మరెవరైనా కళ్ళ కట్టకుని  
నిలవేయవలె.

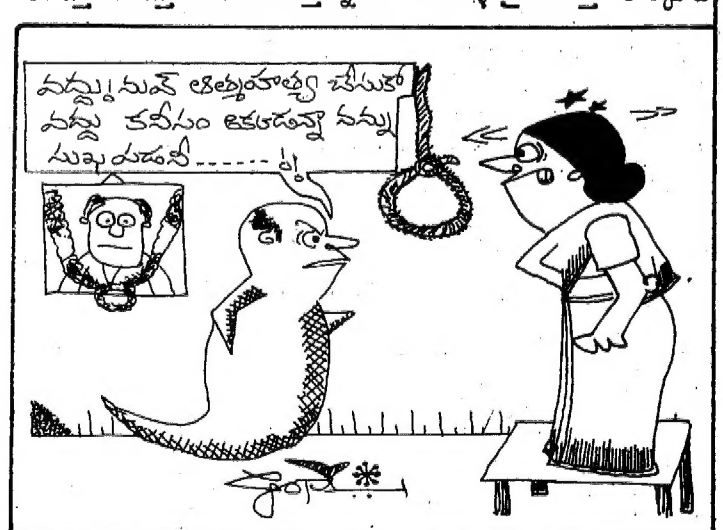
పద్మనాథాన్ని చూసి హోటలు  
మండన్న కుక్క వోళ్ళ నిరుడుకుంటూ  
లేచినిలబడి తోకాంటంటి. పద్మనాథునికి  
అంతురాలే నిలబడి ఆగగా-దీనిగా  
చూచినాగా కుల్లరాడు.

పద్మనాథుని గురించి హోటల్లోకి వెళ్లి  
చూడే రెండు నిమిషాల్లో నెమ్మదిగా  
నడుస్తూ బయటకువెళ్ళుచు "హాహాహా"  
అతడు చూడకుండా వెళ్ళిన "పిల్లల్లోకి"  
అని హోటలు బయట గురించి వేస్తూ  
బోతుమీద వానెనుండి ఆరాలబాబయిన  
వెళ్ళిరిస్తూ లాటియంబూ కనబడ్డాయి,  
తన వేసి దీనిగా ఆగగా ఆకలిగా  
చూస్తూ నిలబడ కులాడిని... తోకాడిన  
నిలబడ కుట్టనీ హుర్రు హుర్రు చూసి  
అల్లీ జీలులు తడుము కంటూ..."  
"వేరదాదే పదనాభం... అబ్బి..."  
అనాడు వీరనాథం లాగా.



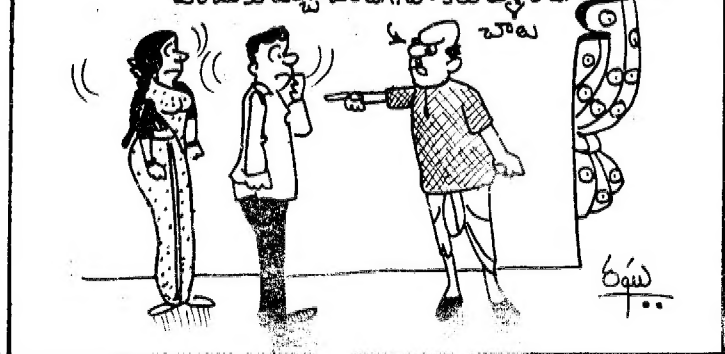
నేను ఇంటికి వచ్చుచున్నప్పుడు రోజువారీ మాకు దయ్యంగా దిబ్బికు అనుకోని వస్తువు హింబంతో మేనన వరికుప్పును ఆ రోజే సూర్యోదయ, వాతావరణం అను కూరింపకుండా వీరడడం వల్ల రాత్రుంక ఎగతగి తూరితే రాత్రునీ ఉద్ధరింపు ముద్రలు మేన మా నాన్నగారి ఇంటికి వచ్చేరు ఆ సాయంత్రం నాన్నగారికి-బరితగిగా లోగా మెక్కి రాదగ్గర చదువుచున్నారు. వెంటనే మా అమ్మగారు కంఠాధారం వాడివెంటడం మా చేపరినాన్నా పురమా అంటుంటే వాడు చిరుచిరు వాడు అక్కడ దయ్యాయి మనుషులు వుంటాయి అను అంటారు కదా వాడు జుమనుకుంటాడు కూడా. మా నాన్నగారు మా అమ్మగారి ఓనీ పెర్రి వెనుకమా వాడు ఏమిదో అనుచున్నావు వాడి జన్మగతి! సింహం, ఏను సింహం, ఓడినీ హాని దయ్యాయి వీరు దయ్యాయి పొరిపొరి దయ్యాయి అని ఒకే నాన్నా నీతో కయం లేదు నీతోరహస్యం ఇదై వున్న అని నా వెంటి? రహస్యం

సామగ్రిగా చెప్పారు అని ముందుగా నేను రాను బాధోమే అని వ్యతిరేకంగా  
రానానం రానా ప్రశ్నకు రాదాని నా  
అంతరితరం తీసుకున్నాను. అంతే రోజులు  
వేయకుండా రానానంకుండా రానానం  
తీసింది. నాకు నిద్రలేచలేదు. సుమారు  
ఒక అరగంటకు ఒక అక్షరం మొదటి  
హామిని బిల్లెంట్ పుర్రని బిల్లెంట్ మా  
దగ్గరకు వచ్చి బాబూ నిద్రలేచే  
బాబూ అప్పుడు అందరినీ పాల్గొని  
అందరినీ పాల్గొని నిద్రలేచే అందరినీ  
అందరినీ పాల్గొని నిద్రలేచే అందరినీ



మా నాన్నగారు చెప్పేరు నీవు వస్తావని అని చింత అలికిత దగ్గరకు స్పీరుగా వెళ్ళి వెళ్ళి ఆపస్తావన కనుగుంజం దాటి, మరో గుంటకు కదలుతున్న మోటో కనిపించి గొప్పసాదిత దగ్గర నలుగురు ఆదాపులు బండిని చిరమేళన చేసి వస్తూన్నారని చరితములు వేసుకొని తారకు ఆపస్తావనకు వెళ్ళి లేని ఆ మంట చుట్టూ గుంటలు చేస్తూ నాడంబి చేస్తూన్నాడు. మా రైతుగారు చింత బి.ఆర్. ఆక్సెస్ ఎంబో. అంటే చేస్తూన్నాడు చూసి మహా... అంటే బాబోయ్ నేను దూసి అనే కరిచి చింత... ఆక్సెస్ ఎంబో చేసి తంజావూరు ఉండా చంపేస్తాను

విష్ణుదాసాచార్యుల కవిత్వమును పరిశీలించుట  
 ఎందుకు? ఎందుకంటే...



పచ్చనిరంగు నాకు ముగ్గురొకటి  
 తోటానాం వచ్చిందొకటి. సరే మా లైకు  
 నాకు ఏకీకరణ పడే ముందు ఒక ట్యాంకు  
 లైకు తీసుకొని వెళ్తున్నాడేదే! ఆ స్వం  
 తానికి డగగరం చేతువని గడ్డి అత్రా  
 వచ్చు. వేసుకొని పడుకున్నాము. అత్రా  
 లైకు నమయించి ఏదో గడ్డి అయితే  
 పొయితుకు వచ్చి చూసే సరికి ఆ ట్రెన్  
 అంతోకే కాళ్ళకు గజలతో గడ్డు గడ్డు  
 ములులు శక్తిం చేసుకుంటూ మానెత్తుతు  
 వున్నాడే. మా లైకు గుర్తుచెప్పి నిద్ర  
 పోతున్నాడు. వేసు లైకుగా నీ గడ్డు  
 కోసము చూస్తున్నాను నీవు వచ్చావు మా

వెళ్ళే సరికి అప్పు పరుగులండును  
 కుంది. చతో గంధుకు కనుమాపు మేరలో  
 కనపించి గడ్డును దగగర నేనుగని  
 అయ్యాకా నాకు ఏదోకానీ లైకుని  
 వస్త్రాలు రుదించి రుదించుకు వేసుకొని  
 కాళ్ళకు అప్పుడప్పుడు పైకి లేసి ఆ  
 ములు చుట్టూ గుండులు చేస్తూ నాలుగం  
 చేస్తున్నాడు. మా లైకుని లేసి ఒక  
 అక్కడ ఎవరో బాధించి వేస్తున్నాడు  
 మాని కొండు అంతే బాధించి నేను  
 రాను అని కొరచి వెయ్యాలి. అక్కడకు  
 వెళ్ళి శంకెమేనూ ఉండా రుదేమేనూ

నుంపుకు మరుదుకు ఇంటికి వచ్చి మా  
 అమ్మకు నాకు గానికొ చేస్తుందికి  
 అమ్మగారు కండు తడి తడిసి ఉడుకు  
 కున్నావు బాబూ లైకుని అందుకు  
 విరువ కాదులు దిప్పి తీసి ఎక్కడా  
 మందుకున్నా కుంపట్లో వేసి వచ్చి

గంధం గడిచిందిరాబాబూ ఒక ఎప్పుడు  
 రాయ్కు వారిం వెళ్ళవచ్చు మీ నాన్న  
 గారు అలాగే చెప్పారు అని నన్ను అప్పుడు  
 చేర్చుకుంటు

జె. బి. రావు